44

एक अच्छा विचार बुरा बन गया

मत्ती 15:1-6; मरकुस 7:1-5, 9-13, एक निकट दृष्टि

''*फिडलर ऑन द रूफ*'' नामक नाटक में एक यहूदी पिता युवा पीढ़ी के पुराने ढंगों के प्रति लापरवाह होने पर स्तब्ध होकर ''परम्परा, परम्परा!'' का एक गीत गाता है। जब भी मैं इस दृश्य को देखता हूं तो मुझे इसमें शामिल हर व्यक्ति पर तरस आता है: जवान लोगों पर, जो उन परम्पराओं से परेशान हैं जिनका उन से कोई सरोकार नहीं है और उस बुज़ुर्ग पर जो अपने परिचित संसार को हाथ से निकलते देख मन ही मन घुट रहा है।

नाटक वाला पिता यदि अपने समय की कुछ परम्पराओं को मिल रही चुनौती से घबरा गया, तो कल्पना करें कि उसे आज कैसा लगेगा। इतने कम समय में पुरानी बुज़ुर्गों की परम्पराओं को उनकी जगह कम स्थाई परम्पराएं लाकर पहले कभी नहीं त्यागा गया। त्यागे हुए मूल्यों के अलावा कि ''वे कौन हैं'' जानने की कोशिश करते हुए जीवन का अर्थ ढूंढ़ते लोग उलझन में हैं।

ऐसा केवल समाज में ही नहीं, धर्म में भी होता है। कुछ लोगों को तो यह लगता है कि जो भी ''परम्परागत'' है, वह अपने आप ही दूर हो जाएगा, जबकि दूसरे लोग अतीत को सम्भालकर रखने की कोशिश करते हैं। ज़्या दोनों के बीच कोई सुरक्षित और युक्तियुक्त स्थान है ? यदि है, तो वह ज़्या है ? परम्पराएं अच्छी कब होती हैं, और वह बुरी कब होती हैं ? उलझन भरे संसार में जिसमें हम रहते हैं, कुछ प्रश्न बड़े नाज़ुक हैं।

बाइबल में परम्पराओं पर सबसे लम्बी चर्चा मत्ती 15 और मरकुस 7 अध्यायों में मिलती है, जब यीशु को इस आरोप के विरुद्ध कि उसके चेले ''पुरनियों की रीतों'' का उल्लंघन करते हैं, उनका बचाव करना पड़ा था। इन दो पदों को कई तरह से देखा जा सकता है,[1] परन्तु हम इस और अगले प्रवचन में उनका इस्तेमाल अभी उठे प्रश्नों का उज़र ढूंढ़ने की कोशिश के लिए करेंगे।

इन प्रवचनों को तैयार करना कठिन था। किसी परम्परा से जुड़े रहने और उसे चलने देने के लिए तैयार होने के बारे में जानना आसान नहीं होता। हमारे लिए उस स्थिति का पता

लगाना कठिन है, जो चरमों से बचती है और उसमें बने रहना और भी कठिन है। अपने ऊपर लागू करने के बजाय दूसरों पर किसी सिद्धान्त को लागू करना आसान है। हम में से कोई भी यीशु द्वारा दोषी ठहराए गए परम्परावाद से बच नहीं सकता।[2] इस प्रकार के प्रवचन अपनी परीक्षा और जांच की मांग करते हैं।

कोई परम्परा बुरी हो सकती है (मत्ती 15:1, 2; मरकुस 7:1-5)

एक दिन, कफ़रनहूम में सिखाते हुए,[3] यीशु का सामना फरीसियों के एक दल से हुआ। ये घुमक्कड़ फरीसी नहीं थे, जो हर जगह उसके पीछे रहते थे! ये यीशु के जल्द विनाश के लिए यरूशलेम से भेजे गए[4] गले पड़ने वाले विवादी थे।[5] यह आरोप कि मसीह सब्त का उल्लंघन कर रहा था, उल्टा असर करने वाला सिद्ध हो चुका था,[6] इसलिए उन्होंने नया आरोप लगाने का प्रयास किया। उन्होंने पूछा, ''तेरे चेले पुरनियों की रीतियों को क्यों टालते हैं? वे बिना हाथ धोए रोटी खाते हैं'' (मत्ती 15:2)।

''रीति'' की परिभाषा

उनके आरोप को समझने के लिए, यह पता होना आवश्यक है कि ''पुरनियों की रीति'' या परम्परा क्या थी और फरीसियों के लिए यह इतनी महत्वपूर्ण क्यों थी। ''रीति'' शब्द उस मिश्रित यूनानी शब्द का अनुवाद है, जिसका मूल अर्थ है ''जो सौंपा गया था।''[7] मत्ती 15:2 में गुडस्पीड ने इस शब्द का अनुवाद ''सौंपे गए नियम'' किया है।[8]

बाइबल में कभी-कभी इस शब्द का इस्तेमाल उस शिक्षा के लिए किया जाता है, जो *परमेश्वर की ओर से* ''सौंपी गई'' थी (अर्थात, परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई शिक्षा; 1 कुरिन्थियों 11:2; 2 थिस्सलुनीकियों 2:15; 3:6)। अधिकतर, इसका अर्थ *मनुष्यों* द्वारा दिए गए नियम के रूप में भी होता है (मत्ती 15:2, 3, 6; मरकुस 7:3, 5, 8, 9, 13; गलातियों 1:14; कुलुस्सियों 2:8)। इस प्रकार की परम्परा की ओर ध्यान दिलाने के लिए *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* में कई बार ''मनुष्यों की परम्परा'' और ''परमेश्वर की प्रेरणा रहित परम्परा'' जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया जाता है। इस और अगले प्रवचन में मैं ''परम्परा'' शब्द का इस्तेमाल मनुष्यों द्वारा बनाई गई परम्पराओं के अर्थ में ही करूंगा।

फरीसियों ने ''*पुरनियों* की रीति'' की बात की। ''पुरनियों'' शब्द का सम्बन्ध आराधनालय के अधिकारियों से नहीं (लूका 7:3),[9] बल्कि अतीत के उन लोगों से था, जिन्हें व्यवस्था के विद्वान माना जाता था।[10] सदियों तक, सम्मानित यहूदी शिक्षक मूसा की व्यवस्था की व्याख्याएं और इसके सम्बन्ध में निर्णय करते रहे थे। वे शिक्षाएं काफ़ी बड़ी ''मौखिक व्यवस्था'' या ''रीति'' के रूप में विकसित हो गई थीं।[11]

फरीसियों की शिक्षा थी कि मूसा ने स्वयं लिखित व्यवस्था के साथ-साथ ''मौखिक व्यवस्था'' दी थी,[12] और यह कि यह ''मौखिक व्यवस्था'' महान शिक्षकों द्वारा दी गई थी। फरीसी ''रीति'' को व्यवस्था के रूप में, बल्कि इससे भी बढ़कर मानते थे। वारेन वियर्सबे

ने रीति या परज़्परा पर दिए जाने वाले ज़ोर को दिखाया है:

> रज्बी एलिएज़र ने कहा है, ''जो व्यज़्ति पवित्र शास्त्र की व्याज़्या परज़्परा के विरोध में करता है उसका आने वाले संसार में कोई भाग नहीं है।'' *तालमुड* में यहूदी परज़्पराओं के संग्रह *मिशना,* में लिखा है, ''पवित्र शास्त्र के विपरीत सिखाने के बजाय रज़्बियों के स्वर के विरोध में किसी प्रकार की शिक्षा अधिक दण्डनीय है।''[13]

''रीति'' या परज़्परा के नियमों को व्यवस्था के इर्द-गिर्द ''बाड़े'' की तरह माना जाता था: विचार यह था कि जो ''रीति'' को नहीं तोड़ता, वह व्यवस्था का भी उल्लंघन नहीं करेगा। आरज़्भ में यह विचार बुरा नहीं था, परन्तु नियमों की संज़्या हज़ारों में और तब तक बढ़ती गई, जब तक अन्त में वे बेतुके नहीं हो गए। यह अच्छे विचार का बुरा हो जाना था।

''रीति'' की मांग की गई

खाने से पहले हाथ धोने की ''परज़्परा'' या रीति एक अच्छा उदाहरण है। औपचारिक अशुद्धता के बारे में पुराना नियम काफ़ी कुछ कहता है। (लैव्यव्यवस्था 11-15 और गिनती 19 पढ़ें।) साधारणतया इस ''अशुद्धता'' का सज़्बन्ध साफ़-सफाई से अधिक नहीं है, परन्तु परमेश्वर तक पहुंचने के लिए मनुष्य की योग्यता का अधिक सज़्बन्ध था। कर्मकांडी अशुद्धता को दूर करने की कुछ रीतियों में नहाना भी शामिल था।[14] पहले दिए गए नियम काफ़ी जटिल थे, परन्तु सदियों बाद, लोग उनमें औपचारिक अशुद्धता और औपचारिक धोने के नियम शामिल करते गए, जिससे अन्त में उनकी संज़्या अत्यधिक हो गई।[15]

''अशुद्ध'' मानी जाने वाली फरीसियों की वस्तुओं, परिस्थितियों और स्थितियों की सूची बहुत लज़्बी थी। इसके अलावा ''अशुद्धता'' एक से दूसरे व्यज़्ति तक पहुंचने वाली, या यूं कहें, कि संक्रामक थी। उदाहरण के लिए, यदि कोई अशुद्ध जन्तु (जैसे चूहा) किसी बर्तन को छू ले, तो वह बर्तन ''अशुद्ध'' माना जाता था। उस बर्तन में जो भी पड़ा हो वह ''अशुद्ध'' हो जाता था। यदि कोई उस बर्तन में रखी चीज़ें खा लेता, तो वह ''अशुद्ध'' हो जाता था। यदि कोई उस ''अशुद्ध'' व्यज़्ति को छू लेता, तो वह भी ''अशुद्ध'' हो जाता था। इस प्रकार ''अशुद्ध'' होने का यह चक्र चलता रहता था।

इस कारण मरकुस ने ज़ोर देकर कहा कि ''फरीसी और सब यहूदी,[16] पुरनियों की रीति पर चलते हैं और जब तक भली-भांति हाथ नहीं धो लेते तब तक नहीं खाते'' (मरकुस 7:3)। अनुवादित शज़्द ''भली-भांति'' के यूनानी शज़्द का मूल अर्थ ''मुज़्के से'' है।[17] *इन द लाइ़फ एण्ड टाइज़्स ऑ़फ जीज़स द मसायाह* में एलफ्रेड एडरशेम ने धोने के विस्तृत कर्मकाण्डों का वर्णन किया है। उसमें से कुछ विवरण इस प्रकार हैं:

> शुद्धिकरण इतनी बार होते थे और यह ध्यान रखा जाता था कि दूसरे कामों के लिए पानी का इस्तेमाल न हो, इस काम के लिए ... बड़े-बड़े बर्तन या जार रखे होते थे।

> ... इनमें से ... डेढ़ ''अण्ड खोल'' जितना पानी निकालने की प्रथा थी। ... पानी दोनों हाथों पर उण्डेला जाता था। हाथ ऊपर इस तरह उठाए जाते थे जिससे पानी बहकर कलाई तक आ जाए, जिससे पूरा हाथ धुल सके और हाथ से गंदा हुआ पानी दोबारा उंगलियों पर न पड़े। इसी प्रकार हर हाथ को दूसरे से (पहले) मला जाता था, अगर मला गया हाथ [धुल गया] हो।[18]

मरकुस ने और ध्यान दिलाया कि फरीसी ''बाज़ार से आकर, जब तक स्नान नहीं कर लेते, तब तक नहीं खाते'' (मरकुस 7:4क) थे। बाज़ार में *कई* चीज़ों से वे अशुद्ध हो जाते होंगे। वे अशुद्ध अन्यजातियों के या अशुद्ध धूल के कणों के सज़्पर्क में भी आते होंगे, जो अशुद्ध अन्यजाति उन पर डाल देते होंगे! बाज़ार से घर आकर, वे केवल हाथ ही नहीं, बल्कि अपना पूरा शरीर धोते थे। या यूं कहें कि खाने से पहले वे स्नान करते थे।

मरकुस ने और जोड़ा है, ''और *बहुत सी और बातें* हैं, जो उनके पास मानने के लिए पहुंचाई गई हैं, जैसे कटोरों, और लोटों, और तांबे के बर्तनों को धोना-मांजना[19]'' (मरकुस 7:4ख)। याद रखें कि इस मांजने का उद्देश्य साफ़-सफ़ाई नहीं, बल्कि औपचारिक शुद्धता थी। ये नियम बहुत अधिक और जटिल थे।

''परज़्परा'' की अवहेलना हुई

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए, आप कल्पना कर सकते हैं कि यीशु के प्रेरितों की साधारण जीवन शैली से फरीसी कितने भयभीत थे। चेलों के पास खाने तक का समय नहीं होता था (मरकुस 6:31), तो उनसे ''पुरनियों की रीति'' का पालन करने के लिए इतना नहाना-धोना कहां हो सकता था। प्रेरितों के बारे में पता था कि उन्होंने खेत से अनाज तोड़कर अपने मुंह में डाल लिया था (मत्ती 12:1-8)![20] इसलिए जब फरीसियों ने ''उसके कई एक चेलों को अशुद्ध अर्थात् बिना हाथ धोए रोटी खाते देखा'' (मरकुस 7:2), तो उन्होंने यीशु से पूछा, ''तेरे चेले ज़्यों पुरनियों की रीतों पर नहीं चलते और बिना हाथ धोए रोटी खाते हैं?'' (मरकुस 7:5)।

जब कोई परज़्परा[21] बुरी होती है (मत्ती 15:3-6; मरकुस 7:9-13)

यीशु अपने आप में धर्मी तथा अपनी ही सेवा करने वाले फरीसियों के साथ धैर्य खो रहा था।[22] उसे उनके आरोप से इनकार करने या सीधे इसका उज़र देने में कोई परेशानी नहीं थी।[23] इसके बजाय उसने *उन्हीं* पर आरोप लगा दिया:

> तुम भी अपनी रीतियों के कारण पमरेश्वर की आज्ञा ज़्यों टालते हो? ज़्योंकि परमेश्वर ने कहा था, कि अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, और जो कोई पिता या माता को बुरा कहे, वह मार डाला जाए। पर तुम कहते हो, यदि कोई अपने पिता या माता से कहे, जो कुछ तुझे मुझ से लाभ पहुंच सकता था, वह

परमेश्वर को अर्पित किया जा चुका है। तो वह अपने माता-पिता का आदर न करे। सो तुमने अपनी रीतियों के कारण परमेश्वर का वचन टाल दिया (मत्ती 15:3-6)।[24]

मैंने पहले उल्लेख किया था, कि आरम्भ में इन रीतियों या परम्पराओं का उद्देश्य मूसा की व्यवस्था के इर्द-गिर्द बाड़ लगाना अर्थात यह सुनिश्चित करने में सहायता करना था कि व्यवस्था का उल्लंघन न हो। परन्तु समय बीतने के साथ-साथ, नये-नये नियम मिलाए जाने पर, उनका सम्बन्ध मूल अवधारणाओं से हटता गया, और अन्त में वे नियम उन आज्ञाओं के बिल्कुल उल्ट हो गए।

एक परम्परा जो बुरी थी

मसीह इसके कई उदाहरण दे सकता था (मरकुस 7:13ख), परन्तु उसने बात अपने तक ही रखी: ''क्योंकि परमेश्वर ने[25] कहा था, कि अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, और जो कोई पिता या माता को बुरा कहे,[26] वह मार डाला जाए'' (मत्ती 15:4)। इन आज्ञाओं में पहली आज्ञा मूल दस आज्ञाओं में से ही थी (निगर्मन 20:12; व्यवस्थाविवरण 5:16)। दूसरी आज्ञा व्यवस्था में शामिल थी, जो बढ़ाई गई थी और लागू की गई थी (निर्गमन 21:17; लैव्यव्यवस्था 20:9)। ये दो आज्ञाएं किसी व्यक्ति के अपने माता-पिता के साथ सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं को शामिल करती थीं कि उसके लिए अपने पिता और माता का आदर करना और उनकी देखभाल करना आवश्यक *था*। इसमें बूढ़ा होने पर उनकी आवश्यकताओं का ध्यान रखना शामिल था (देखें नीतिवचन 23:22; 1 तीमुथियुस 5:8)। उसे ऐसा कुछ *नहीं* करना था, जिससे लगे कि उनका अपमान हो रहा है।

दुर्भाग्य से, इन आज्ञाओं की उपेक्षा करते हुए एक मानव-निर्मित परम्परा मिला दी गई। अपने आरोप लगाने वालों को दोषी ठहराते हुए यीशु की आंखें अवश्य चमक आई होंगी:

... तुम अपनी रीतियों को मानने के लिए परमेश्वर की आज्ञा कैसे अच्छी तरह टाल देते हो! क्योंकि मूसा ने कहा है कि अपने पिता और अपनी माता का आदर कर; ... परन्तु तुम कहते हो कि यदि कोई अपने पिता या माता से कहे, कि जो कुछ तुझे मुझ से लाभ पहुंच सकता था, वह कुरबान अर्थात् संकल्प हो चुका। तो तुम उस को उसके पिता या उस की माता की कुछ सेवा करने नहीं देते। इस प्रकार तुम अपनी रीतियों से, जिन्हें तुम ने ठहराया है, परमेश्वर का वचन टाल देते हो (मरकुस 7:9-13क)।

''कुरबान'' अरामी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ ''भेंट'' या ''उपहार'' है। कोई यहूदी मन्नत मांग सकता था कि उसके पास रखा एक निश्चित भाग परमेश्वर को ''कुरबान'' या ''भेंट'' है। ये सब चीज़ें उसकी मृत्यु तक उसके पास रह सकती थीं, बाद में वे मन्दिर

की सज़्पज़ि बन जाती थीं, परन्तु जब तक वह जीवित रहता, तब तक ये सज़्पज़ियां अस्पृश्य मानी जाती थीं।[27] यीशु के अनुसार, यदि कोई व्यज़्ति मन्नत माने तो फरीसी ''उसे अपने पिता या अपनी माता के लिए कुछ करने की *अनुमति* नहीं'' देते थे। रज़्बियों में एक कहावत थी: ''माता-पिता को कठिनाई तो है, परन्तु व्यवस्था साफ़ बताती है, मन्नत तो पूरी करनी ही होगी।''[28]

अपने मन में यह तस्वीर बनाएं: एक पुरुष और एक स्त्री अपने बेटे के घर पहुंचते हैं। स्त्री पुकार रही है। आदमी कठोर लगता है। वे दरवाज़ा खटखटाते हैं। जब उनका लड़का दरवाज़ा खोलता है, तो वे दुखी होकर कहते हैं, ''हमारा सब कुछ लुट गया है।[29] अब तुम ही हमारी आशा हो। तुम हमारी सहायता नहीं करोगे, तो हमें भीख मांगनी पड़ेगी, वरना हम भूखे मर जाएंगे।'' जवान लड़का उनकी ओर अर्थात अपने माता-पिता की ओर जो उसे संसार में लाने के लिए ज़िज़्मेदार थे, जिन्होंने बचपन से उसे पाला-पोसा और बड़ा किया था, तिरस्कार से देखता है। वह उनसे कहता है, ''क्षमा करें, मैं आपकी सहायता नहीं कर सकता! मैंने आपके बुढ़ापे के लिए कुछ पैसे रखे हुए थे, लेकिन एक दिन एक फरीसी आया और कहने लगा कि उन पैसों को मैं कुरबान के लिए दे दूं। सो यहां से चले जाओ! अब मेरे पास कुछ नहीं है। अपने लिए कोई और रास्ता तलाश करो! और दोबारा इधर मांगने के लिए मत आना!'' इतना कहकर, वह दरवाज़ा उनके मुंह पर धज़्म से मारता है।

मैं ऐसा दृश्य दिखाने से भी घबराता हूं। स्पष्टतया, प्रभु के समय में भी ऐसी दुखद घटनाएं होती थीं। यीशु ने आरोप के इस भाग को इस प्रकार समाप्त किया, ''सो तुमने अपनी रीतियों के कारण परमेश्वर का वचन टाल दिया'' (मज़ी 15:6ख)। मरकुस के अनुसार, उसने और कहा कि ''और ऐसे-ऐसे बहुत से काम करते हो''[30] (मरकुस 7:13ख)।

परज़्पराएं जो अच्छी हैं

यह ध्यान दिलाने के लिए मुझे यहां पर रुकना होगा कि परज़्पराएं चाहे मनुष्यों द्वारा बनाई गई ज़्यों न हों, आवश्यक नहीं कि अपने आप में गलत ही हों। बाइबल में परमेश्वर के लोगों के प्रभु की स्वीकृति से मनुष्यों की परज़्पराओं में भाग लेने के उदाहरण मिलते हैं। यहूदी लोगों के जीवनों में अर्थात उनके पारज़्परिक विवाहों, जनाज़ों तथा ऐसे अन्य कार्यक्रमों में यीशु के भाग लेने पर विचार करें। समर्पण के पर्व पर (यूहन्ना 10:22), जो पुराने और नये नियमों में के समयों में आरज़्भ होने वाला एक यहूदी पर्व था, मसीह की उपस्थिति पर विचार करें।[31]

परज़्परा की हमारे जीवनों में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इससे जीवन में निरन्तरता मिलती है और जीवन में रंग भर जाते हैं, जो इनके बिना नीरस सा लगता। हाल ही के वर्षों में, समाजशास्त्रियों ने ज़ोर दिया है कि किसी व्यज़्ति के मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य के लिए ''जड़ों'' का होना आवश्यक है। लोगों के किसी समूह के साथ, चाहे वह मण्डली ही हो, कुछ बातों को परज़्परागत ढंग से करने में तब तक कोई बुराई नहीं है, जब तक वे परमेश्वर

की परम्परा का उल्लंघन नहीं करतीं।

परम्पराएं जो निर्विवाद रूप में बुरी होती हैं

इससे हम इसी प्रश्न पर लौट आते हैं कि ''कोई परम्परा गलत कब होती है?'' यीशु का पहला उज़र ऐसे वाक्य में हो सकता है: ''जब वह परम्परा परमेश्वर की स्पष्ट आज्ञा का उल्लंघन करती है।'' मसीह ने कहा कि फरीसी लोग अपनी परम्पराओं के लिए परमेश्वर की आज्ञा को *तोड़ते* थे (मत्ती 15:3), अर्थात वे अपनी परम्परा को जारी रखने के लिए इसे *रद्द करते* थे (मरकुस 7:9), अर्थात वे इस प्रकार अपनी परम्परा से परमेश्वर के वचन को *अमान्य बना देते* थे (मत्ती 15:6; मरकुस 7:13)। प्रभु ने फरीसियों को ''कपटी'' कहा (मत्ती 15:7; मरकुस 7:6), क्योंकि वे चेलों पर तो ''*पुरनियों* की परम्परा'' का पालन न करने का आरोप लगा रहे थे, परन्तु स्वयं ''*परमेश्वर* की आज्ञा तोड़ रहे थे''!

धार्मिक तौर पर मुझे अपने ही बारे में सोचने की बात सिखाई गई थी। इसके अलावा, मैं अमेरिका के उस भाग में पला-बढ़ा, जहां आम तौर पर स्वतन्त्र सोच को प्रोत्साहित किया जाता था। इसलिए मुझे फरीसियों से कही गई यीशु की बातें ऑस्ट्रेलिया में दस वर्ष रहने से पहले पूरी तरह से समझ नहीं आई थी, जहां अधिकतर कलीसियाएं लगभग पूरी तरह से परम्पराओं में बंधी हुई थीं (और हैं)।[32] ये साम्प्रदायिक कलीसियाएं कलीसिया के उस अधिकारी की परम्पराओं का पालन करती हैं, जो बाइबल का अधिकार कमज़ोर करता है (पढ़ें 2 तीमुथियुस 3:16, 17); ''शिशुओं का बपतिस्मा'' जो बपतिस्मे पर बाइबल की शिक्षा को रद्द करता है (मरकुस 16:15, 16), की परम्पराएं; ''विशेष दिनों'' की परम्पराएं जो व्यावहारिक तौर पर मसीही सभा न छोड़ने के निर्देश को रद्द कर देती हैं (इब्रानियों 10:25); और ऐसी कई बातें हैं। जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने लिखा है ''[परमेश्वर की प्रकट इच्छा में] एक भी ... जोड़ या सुधार नहीं होगा, जिससे कोई आज्ञा कम या अधिक रद्द न होती हो।''[33]

सारांश

हम में से अधिकतर लोग इस बात से सहमत होंगे कि मनुष्य की बनाई कोई भी परम्परा जो किसी के लिए परमेश्वर की आज्ञा तोड़ने का कारण बनती है, गलत है। परन्तु यीशु ने यह अभियोग पूरा नहीं किया था। अगले प्रवचन में हमारा अध्ययन और भी व्यक्तिगत होगा, जिसमें हम यह सुनिश्चित करने के लिए कि कोई परम्परा अच्छी है या बुरी, मसीह द्वारा दी गई कसौटी पर चर्चा करेंगे।

यदि आपको इस प्रवचन से कुछ नहीं मिलता, तो भी मुझे आशा है कि आप इस महान सच्चाई को समझ गए हैं कि *हमें परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में किसी भी बात को रुकावट नहीं बनने देना चाहिए।* यदि आप अभी मसीही नहीं हैं, तो मेरी प्रार्थना है कि आप इन स्पष्ट आज्ञाओं का पालन करें: यीशु में विश्वास लाएं, अपने पापों से मन फिराएं, अपने विश्वास का अंगीकार करें और प्रभु में बपतिस्मा (डुबकी) लें (यूहन्ना 3:16; प्रेरितों

17:30; रोमियों 10:9, 10; प्रेरितों 2:38; गलातियों 3:26, 27)। यदि आप परमेश्वर के अविश्वासी बालक हैं, तो मैं आपसे अपने उस पहले वाले प्रेम में लौट आने का आग्रह करता हूं (गलातियों 6:1; याकूब 5:19, 20; प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16)।

शैतान ने यह झूठ बेचा है कि प्रभु के पास आने के बहुत से मार्ग हैं, परन्तु यीशु कहता है, "*मार्ग* ... मैं ही हूं" (यूहन्ना 14:6)।[34] परमेश्वर के विश्वासयोग्य वचन का स्थान मनुष्यों की शिक्षाओं को न दें!

नोट्स

परम्परा पर यीशु की शिक्षा के मेरे विस्तार में जाने की कोशिश के कारण, यह प्रवचन दो भागों में बंट गया है। आप इसे ऐसे ही छोड़ सकते हैं, शायद एक भाग को रविवार प्रात: प्रचार करने के लिए और दूसरे भाग को शाम के समय। आप चाहें तो यह ज़ोर देते हुए कि आपके सुनने वालों के लिए सबसे अधिक प्रासंगिक क्या है, दोनों का एक प्रवचन बन सकता है।

अपनी प्रस्तुति के भाग के लिए, आपको चाहिए कि परम्परा और सच्चाई में अन्तर करने वाले चार्ट का इस्तेमाल करें। आरम्भ करने के लिए (कई स्रोतों से लिए गए) कुछ विचार इस प्रकार हैं:

मनुष्यों की **परम्परा** (जब इसका दुरुपयोग होता है)
लोगों को भाती है (देखें गलातियों 1:14)
बाहरी रूप पर ज़ोर देती है
दिखावटी है
सतही है
कर्मकांडों पर ज़ोर देती है
व्यर्थ बातों को जन्म देती है
वचन का स्थान ले लेती है
दासता में लाती है

परमेश्वर की **सच्चाई** (इस्तेमाल होने पर)
परमेश्वर को भाती है
मन पर ज़ोर देती है
बुनियादी है
धार्मिकता पर ज़ोर देती है
जीवन बदल देती है
वचन को ऊपर उठाती ह
स्वतन्त्रता दिलाती है (यूहन्ना 8:31, 32)

टिप्पणियां

[1]पिछले पाठ के बाद दिए गए नोट्स में अन्य ढंगों की रूपरेखा दी गई है। [2]कलीसिया के इतिहास का पुराना छात्र होने के कारण मैं जानता हूं कि पुरानी परम्पराओं की निन्दा करने वाले लोग नई परम्पराओं को स्थापित करने में व्यस्त रहते हैं–और उन्हें किसी कट्टर व्यक्ति की तरह ही अपने विचारों के ''सही'' होने पर दृढ़ माना जा सकता है। [3]यह पांच हज़ार को खिलाने तथा पानी पर चलने के आश्चर्यकर्मों के थोड़ी देर बाद हुआ था (मत्ती 14:15–33); यूहन्ना 6:17, 59 संकेत देता है कि यीशु इन आश्चर्यकर्मों के बाद कफ़रनहूम में था। [4]यह व्याख्यात्मक वाक्यांश अपनी व्याख्या आप करने वाला है: जब कोई घातक पशु किसी दूसरे पशु को मारना चाहता है, तो अक्सर वह अपने शिकार को गले से ही पकड़ता है। [5]यह निष्कर्ष इन तथ्यों के आधार पर निकाला गया है कि (1) फरीसी उसे मारने का बहाना ढूंढ़ रहे थे (देखें यूहन्ना 5:18; 7:1) और (2) ये फरीसी उस पर आरोप लगाने के लिए यरूशलेम से चलकर आए थे। आर. सी. फोस्टर ने उन्हें ''शॉक ट्रूप्स फ्रॉम द कैपिटल'' (*स्टडीज़ इन द लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1971], 664) कहा है। [6]''मसीह का जीवन, भाग 2'' में पृष्ठ 53 से आरम्भ होने वाले ''तूफ़ान को शान्त करना'' पाठ की समीक्षा करें। यीशु के शत्रुओं ने अन्य आरोप लगाकर भी कोशिश कर ली थी, परन्तु वे सफल नहीं हुए थे। [7]मिश्रित यूनानी शब्द *paradosis* है। *Para* एक उपसर्ग है, जिसका अर्थ सामान्यतया ''के साथ'' होता है, जबकि *dosis* का अर्थ मूलत: ''देना (या हस्तान्तरण करना)'' है। यूनानी विद्वानों के अनुसार, *पैरा* और *डोसिस* ''जो दूसरों को सौंपा गया है'' का अर्थ देता है। (जेम्स ए. स्वैन्सन के साथ डब्ल्यू. ई. वाइन, *द एक्सपैन्डड वाइन 'स एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स,* सम्पा. जॉन आर. कैहलिन बर्गर III [मिनियापुलिस: बैथनी हाउस पब्लिशर्स, 1984], 1159–60.) मरकुस 7:13 में इस शब्द के संज्ञा रूप और क्रिया रूप दोनों का इस्तेमाल किया गया है। NASB में आयत के इस भाग का अनुवाद ''तुम्हारी *परम्परा* जो तुम ने *सौंपी* है'' है। [8]एड्गर जे. गुड स्पीड एण्ड जे. एम. पोविस स्मिथ, *द शॉर्ट बाइबल: एन अमेरिकन ट्रांसलेशन* (न्यू यॉर्क: मॉडर्न लाइब्रेरी, 1933), 347. [9]पुस्तक में पहले आया ''क्या तुम्हें विश्वास है?'' पाठ देखें। [10]मत्ती 19:3–9 का अध्ययन करते समय हम इन दो लोगों अर्थात हिल्लेल और शम्मै पर संक्षेप में चर्चा करेंगे।

[11]ये परम्पराएं *मिशना* (या *मिशनाह)* नामक पुस्तक में तीसरी शताब्दी ईस्वी में एकत्रित की गई थीं। तीसरी शताब्दी के अन्त तक, इसे *तालमुड* नामक पुस्तक संग्रह में अन्य सामग्रियों के साथ बढ़ाया गया था। *तालमुड* को आज भी यहूदी रब्बियों द्वारा आधिकारिक माना जाता है। [12]निश्चय ही यह असत्य था। बहुत से धार्मिक गुट आज यह कहकर कि उन्हें प्रेरितों द्वारा सिखाया गया था और सदियों पुरानी ''कलीसिया की'' परम्परा उन्हें सौंपी गई थी, अपने मनघड़ंत नियमों को उचित ठहराने की कोशिश करते हुए यही दावा करते हैं। [13]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *द बाइबल एक्पोज़िशन कमैन्ट्री,* अंक 1 (व्हीटन, इलीनोयस: विक्टर बुक्स, 1989), 134. [14]उदाहरण के लिए, लैव्यव्यवस्था 15:5–8, 10–12 पढ़ें। एक और उदाहरण याजकों द्वारा हाथ–पांव धोने और तब्बू में प्रवेश से पूर्व नहलाए जाने का है (निर्गमन 30:19; 40:12)। [15]मत्ती 23 अध्याय में यीशु ने फरीसियों पर ''भारी बोझ ... मनुष्यों के कंधों पर'' डालने का आरोप लगाया (आयत 4)। यह कहते समय मसीह के मन में यही बोझिल परम्पराएं होंगी। [16]फरीसियों का प्रभाव ऐसा था कि यह परम्परा यहूदी लोगों की दिनचर्या का भाग ही बन गई। [17]NASB वाली मेरी प्रति के सैन्टर कॉलम में यह परिभाषा दी गई है। [18]एल्फ्रेड एडरशेम, *द लाइफ़ एण्ड टाइम्स ऑफ़ जीज़स द मसायाह,* न्यू अपडेटेड वर्ज़न (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1993), 482. [19]यूनानी शब्द के अनुवाद ''धोना–मांजना'' के लिए मूल शब्द का अर्थ ''बपतिस्मा देना'' या ''डुबकी देना'' है। [20]यह भी सम्भव है कि फरीसियों को ख़बर मिली थी कि यीशु ने पांच हज़ार लोगों को बिना हाथ धोए खाना खाने की अनुमति दी थी। पांच हज़ार को खिलाने की घटना इस घटना से थोड़ा पहले घटी थी।

[21]''परम्परा'' से, मेरा अभिप्राय ''मनुष्य की परम्परा है।'' यह मुख्य प्वायंट और अगले प्रवचन पर दो मुख्य प्वायंट कुछ सीमा तक एक–दूसरे को ढांपते हैं, परन्तु अलग से ध्यान दिलाने के लिए हर एक का महत्व

है। [22]उसने उन्हें कपटी कहा (मत्ती 15:7)। उसकी मुख्य दिलचस्पी इस बात में नहीं थी कि उन्हें बुरा लगे या नहीं (मत्ती 15:12-14)। [23]बाद में उसने, उस भीड़ के भले के लिए जो यह देख और सुन रही थी, इस आरोप का कुछ सीमा तक उज़र दिया (मत्ती 15:10, 11; मरकुस 7:14-16); परन्तु फरीसियों से सीधे बात करते समय उसने ऐसा नहीं किया। [24]मत्ती ने पहले यीशु का आरोप और फिर यशायाह से यीशु का उद्धरण लिखा। मरकुस ने इस क्रम को उल्टा कर दिया। क्रम का महत्व नहीं था। इस प्रकार के थोड़े बहुत अन्तर स्वतन्त्र गवाहों में होने स्वाभाविक हैं। [25]मरकुस ने लिखा, ''ज़्योंकि *मूसा ने* कहा है ...'' (मरकुस 7:10)। यह एक और प्रमाण है कि यीशु मानता था कि व्यवस्था देने के समय मूसा *परमेश्वर से मिली* प्रेरणा *से बोलता था*। [26]आगे उदाहरण में, माता-पिता को ''बुरा कहने'' या (श्राप देने) की कोई बात नहीं है, जैसा कि हम इस शब्द को मानते हैं, बल्कि ज़रूरतमंद माता-पिता की सहायता किए बिना उन्हें भेज देना, उन को *श्राप* देने जैसा है। जिसमें उन्हें भूख और अपमान सहना पड़ता। [27]कुछ लोगों का अनुमान है कि यद्यपि सज़्पज़ियां तकनीकी रूप से परमेश्वर की हैं, व्यज़्ति जब तक जीवित रहे, उनका व्यज़्तिगत इस्तेमाल करता रहे। [28]वाइन, 232 में उद्धृत किया गया। पुराने नियम का नियम था कि मानी गई मन्नतें पूरी की जाएं (देखें गिनती 30), परन्तु मन्नतों के नियमों को इस प्रकार से लागू करना, जिससे दस आज्ञाओं का सिद्धांत रद्द हो जाए, असंगत था। [29]उस समय भी किसी का सब कुछ खोना सज़्भव था (मत्ती 6:19) और आज भी है। [30]''*मसीह का जीवन, भाग 2*'' में पृष्ठ 53 से आरज़्भ होने वाले ''तूफ़ान को शान्त करना?'' पाठ पर विचार करें।

[31]''*मसीह का जीवन, भाग 1*'' पुस्तक में पृष्ठ 79 पर ''यहूदियों के पर्व'' चार्ट देखें। [32]इन्हीं परज़्पराओं को मानने वाली कलीसियाएं आज भी हैं, जहां मैं रहता हूं, परन्तु वहां इन धार्मिक समूहों की चलती नहीं है। [33]जे. डज़्ल्यू. मैज़्गर्वे एण्ड फिलिप्प वाई पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* (सिंसिनटी: स्टैण्डर्ड पज़्लिशिंग कं., 1914), 396. [34]वास्तव में, यूनानी शास्त्र में भी यही ज़ोर दिया गया है।